NaiDuniya (Indore), 26th November 2026, City Page-I

इंदौर की विज्ञानी एशिया में आपदा जोखिम घटाने पर करेंगी काम

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर: दुनियाभर में प्राकृतिक आपदा से होने वाले नुकसान को कम करने, पूर्व तैयारी को बेहतर करने तथा लोगों की सुरक्षा को और पुख्ता करने की दिशा में इंदौर की विज्ञानी प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा दुनियाभर के विज्ञानियों के साथ काम करेंगी। उन्हें अमेरिकन जियोफिजिकल यूनियन (एजीयू) के नेचुरल हैजर्ड्स सेक्शन का प्रेसिडेंट चुना गया है। खास बात यह है कि वे भारत की पहली महिला विज्ञानी हैं, जिन्हें इस पद के लिए चुना गया है। इसके साथ ही उन्हें एजीयू काउंसिल का सदस्य बनने का अवसर भी मिलेगा।

वर्तमान में प्रो. नीलिमा सत्यम भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग में इंस्टीट्यूट चेयर प्रोफेसर हैं। इससे पूर्व वे जियोटेक्निकल इंजीनियरिंग, भूकंप इंजीनियरिंग, भूस्खलन जोखिम आकलन, मलबा प्रवाह माडलिंग और आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर कार्य कर चुकी हैं। एजीयू से उनका जुड़ाव लंबे समय से रहा है। वे संगठन की नेचुरल हैजर्ड्स एग्जीक्यूटिव कमेटी, कैनवसिंग कमेटी और सेक्शन अवाड्र्स कमेटी में जिम्मेदारी निभा चुकी हैं। वर्ष 2025 में उन्हें एजीयू नेचुरल हैजर्ड्स मिटिगेशन अवार्ड से सम्मानित किया गया था।

60 प्रतिशत घटित हैं प्राकृतिक आपदाएं

प्रो. नीलिमा सत्यम के अनुसार उनका फोकस एशिया में प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले खतरे को कम करना होगा। उन्होंने बताया कि एशिया में दुनिया की करीब 60 प्रतिशत प्राकृतिक आपदाएं घटित होती हैं। ऐसे में इस क्षेत्र के देशों के बीच वैज्ञानिक सहयोग और शोध को बढ़ाया जाएगा। प्रयास रहेगा कि जिन देशों में आपदा से निपटने के अलग-अलग अनुभव और बेहतर कार्यप्रणालियां हैं, उनसे दूसरे देश भी सीखें और उन्हें अपनी परिस्थितियों के अनुसार अपनाएं। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि भूकंप की स्थिति में भारत और जापान के जोखिम तथा नुकसान में काफी अंतर देखने को मिलता है। जापान में बेहतर भवन निर्माण तकनीक, जागरूकता और आपदा प्रबंधन की तैयारी के कारण जनहानि को काफी हद तक कम किया जा सका है। भारत और नेपाल जैसे देशों को भी ऐसे बेहतर तरीकों से सीखने और उन्हें अपनाने की दिशा में काम करना चाहिए।



प्रो. नीलिमा सत्यम

भारत को भी मिलेगा लाभ

प्रो. नीलिमा सत्यम ने बताया कि वे पहले से ही राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की लैंडस्लाइड संबंधी टेक्निकल एडवाइजरी कमेटी की सदस्य हैं। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एजीयू से मिलने वाले अनुभवों और विशेषज्ञता को भारत में आपदा प्रबंधन के प्रयासों से जोड़ने का अवसर मिलेगा। जरूरत पड़ने पर अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों को भारत आमंत्रित किया जाएगा। इसके साथ ही भारतीय विद्यार्थियों और शोधार्थियों को भी विदेशी विशेषज्ञों के साथ काम करने और अंतरराष्ट्रीय शोध सहयोग से जुड़ने के अवसर मिलेंगे। इस तरह मजबूत नेटवर्क तैयार कर भारत में प्राकृतिक आपदाओं से निपटने की वैज्ञानिक क्षमता को और बेहतर बनाया जा सकेगा।

इन क्षेत्रों में किया कार्य

प्रो. नीलिमा सत्यम वर्तमान में पहाड़ों में भूस्खलन कब हो सकता है, इसकी पहले से जानकारी मिले और समय रहते लोगों को सुरक्षित जगह पहुंचाया जा सके, इस दिशा में कार्य कर रही हैं। उन्होंने दार्जिलिंग हिमालय के कालिम्पोंग से लेकर उत्तराखंड और केरल के वायनाड व इडुक्की तक भूस्खलन के खतरे को समझने और उसकी निगरानी के लिए शोध किया है। उत्तराखंड के लामबगड़ में उन्होंने ढलान पर सेंसर लगाकर करीब साढ़े तीन साल तक निगरानी की और स्थानीय स्तर पर चेतावनी प्रणाली विकसित की। उनका शोध अब नीति और मानक तैयार करने तक पहुंच चुका है।